लखनऊ, सोमवार 05 सितंबर 2016 पृष्ठ 12 मूल्य 2.00 रुपये आरएनआई संख्या-UPHIN-2008/44651 ई-पेपर : www.dainikprabhat.in वर्ष 8, अंक 314

लखनऊ, मेरठ, गाजियाबाद एवं देहरादून से एक साथ प्रकाशित

प्रभात प्रकाशन का 72वां साल

स्थापित 1944

प्रभात

सीधी बात-सच्ची बात

"शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।"

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

आज का मार्केट	निफ्टी : 8809.65 सेंसेक्स : 28,532.11	आज का भाव	सोना (10 ग्रा.) : 31,000 चांदी (प्र. कि.ग्रा.) : 45,900
आज का मौसम	सूर्योदय: 06 : 02 सूर्यास्त: 06 : 32	आज का तापमान	अधिकतम : 34.4 डिग्री न्यूनतम : 24.8 डिग्री

सार संक्षेप

'शिक्षा में नैतिकता पर बल के लिए परम्पराओं से जुड़ना होगा'

लखनऊ। बदलते दौर में गुरुकुल परम्परा व्यवहार में भले ही अव्यवहारिक लगे लेकिन शिक्षा व्यवस्था में नैतिकता पर बल देने के लिए परम्पराओं को भी साधना होगा। यह बात शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षाविद डा. भरतराज सिंह ने कही। उल्लेखनीय है कि श्री सिंह स्कूल ऑफमैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक हैं।

डा. सिंह का मानना है कि किसी देश के विकास मे शिक्षा का विशेष महत्व है। ऐसे में हमे शिक्षण व्यवस्था में गुरूजन जिन्हे अनुभव है व वरिष्ठ हैं वह चाहे जिस क्षेत्र से सेवानिवृत्त हो समाज व राष्ट्र हित में बीणा उठाये कि वह अच्छे शिक्षक तैयार करेंगे। उनमें नैतिक का विकास सर्व प्रथम करेंगे। फिर शिक्षा व्यवस्था दुरूस्त करने की बात की जाय। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अच्छे अंक, सर्टिफिकेट अथवा डिग्री दे सकता है, जो किसी भी अच्छे सेवायोजक की न्यूनतम आवश्यकता मानी जा सकती है, परन्तु उसमें नैतिकता का विकास नही है तो वह उस सेवायोजक के यहां पहले तो नौकरी नहीं पा सकता है। यदि वह नौकरी पा भी गया तो कार्यकुशलता के अभाव में कुछ दिनों में अयोग्य घोषित होकर निकाल दिया जायेगा।